THE BOOK WAS DRENCHED

UNIVERSAL LIBRARY
OU_180529
UNIVERSAL LIBRARY

गर्मी की छुट्टियों में

(बाल–उपन्यास)

शम्भू "विकल"
एम० ए०

हमारे यहाँ से प्रकाशित
लेखक की अन्य रचनायें
इसी माला में

अफ्रीका के आंचल में

शिकार, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक आधार पर लिखा गया एक अनुपम उपन्यास। पूर्वी अफ्रीका के बारे में सभी ज्ञातव्य जानकारी।

विश्व-विजेता सिकन्दर

सिकन्दर महान के जीवन सम्बंधी एवं उसकी प्रसिद्ध लड़ाइयों का वर्णन। बिल्कुल आधुनिक खोज के आधार पर लिखा गया अपने ढंग का पहला बाल-उपन्यास।

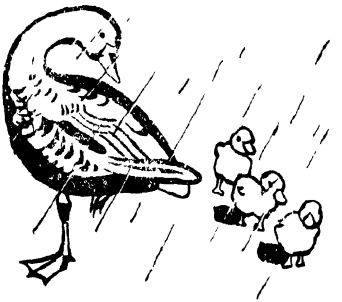

(बाल-उपन्यास)

गर्मी की छुट्टियों में

संध्या प्रकाशन
१२४१, मालीवाड़ा
दिल्ली-६

प्रकाशक :
संध्या प्रकाशन
१२४१, मालीवाड़ा,
दिल्ली–६ ।

कापी राइट—१९६३:—शम्भू 'विकल' एम० ए०

प्रथम संस्करण

मूल्य | २.५० न. पै.

मई–१९६३

मुद्रक :
अजन्ता प्रेस
रोड १३, नई मण्डी,
मुजफ्फरनगर ।

अकसर सुना जाता है और वास्तव में यह सच भी है कि हमारे देश में बाल साहित्य का प्रकाशन उचित स्तर पर नहीं है। बालकों की कोमल और अपरिपक्व बुद्धि के लिए सरल और स्वस्थ्य मनोरंजन के साथ-साथ उनके ज्ञान के विकास के हेतु ही इस माला का प्रकाशन उपस्थित है। इस माला की पुस्तकों में सबसे बड़ा ध्यान इस बात पर दिया गया है कि बालक अपने स्कूल के अतिरिक्त समय में पुस्तक पढ़ने का शौक उत्पन्न कर सकें। एक पुस्तक पढ़ने के बाद ही उनमें और अधिक पुस्तक पढ़ने की उत्कंठा सहज ही उत्पन्न हो जाएगी।

'गर्मी की छुटियों में' तीन नटखट बालकों की कहानी है। वह अपनी गर्मी की लम्बी छुट्टियों में हमारे देश के नव-निर्माण के कार्य में प्रेरित हो कर खेल-खेल में एक आदर्श नव-निर्माण का कार्य कर डालते है। प्रायः हमारे देश के मध्य-स्तर और निम्न स्तर के परिवार में बच्चों को गर्मी की छुट्टियों में समय का

दुरुपयोग होता देखा जाता है। मात-पिता के पास इतने साधन भी नहीं कि वह अपने बच्चों को देशाटन आदि के लिए भेज सकें। नतीजा यह होता है कि बच्चे गली के अन्य लड़कों के साथ बुरी संगत में पड़ जाते हैं। इसी समस्या पर एक प्रोग्राम भी इस उपन्यास में बच्चों के लिए दिया गया है। हमारा विश्वास है कि इस उपन्यास के प्रकाशन से हमारे देश के नौनिहालों को एक नई दिशा मिलेगी।

— :•: —

*

तीन मित्र

विजय को प्यार से घरवाले 'बिज्जू' कहते थे। परन्तु घर के बाहर सभी उसे नटखट कहते थे। हां, यह बात जरूर थी कि उसके दो दोस्त मोहन और विमल उसे विजय कुमार ही कहते थे। उसके यह दोनों दोस्त उसे अपना लीडर मानते थे और उसके इशारे पर चलते थे।

विजय का नटखट नाम उसकी शरारतों के कारण ही पड़ा था। स्कूल में, पड़ोस में और बाज़ार में उसकी रोज एक न एक नई नई शरारतों के कारण ही लोगों ने उसे इस नाम से पुकारना शुरू किया था।

परन्तु विजय की मां को यह बुरा लगता था। वह अपने प्यारे बेटे को नए नाम से पुकारा जाना पसन्द न करती थी। वह शाम को खाना खिलाते वक्त बड़े दुलार से कहती थी—बेटा बिज्जू, तू इतनी शरारतें क्यों करता है ? देख लोगों ने तेरा नाम भी बदल

कर नटखट रख दिया है। तेरा विजय नाम् तो अब केवल स्कूल के रजिस्टर में लिखा है या फिर तेरी जन्म पत्री मे है। तुझे लोग तेरे असली नाम से भी पुकारना पसन्द नही करते है।

वह चुपचाप अपनी मां की बातों को सुनता रहता था। कभी कभी वह मा से कह देता था—देख मां, मुझे विमल और मोहन विजय कुमार के नाम से हमेशा पुकारते है। तुझे विश्वास न हो तो उन्हें बुलाकर पूछ ले।

मां उसकी बातों को सुनकर हंस देती और वह जल्दी से खाना समाप्त कर अपने घर की छत पर भाग जाता था। विजय के दोनों साथी मोहन और विमल भी अपनी अपनी छतों की मुंडेरों को फांद कर उससे आ मिलते थे। यह लोग पतंग उड़ाते, गोली खेलते और जब अंधेरा हो जाता था तब चुपचाप, धीरे धीरे आपस में सलाह कर कोई नई शरारत करने की योजना बनाने में लग जाते थे। विजय के सामने उसके दोनों दोस्त अपनी अपनी राय रखते थे और अन्त में बहुत सोच विचार के बाद वह लीडर होने के कारण अपना अन्तिम फैसला सुना देता था। अक्सर, इस समय दूसरे दिन का कार्यक्रम

बनाया जाता था ।

कई बार लोग इन तीनों साथियों की शरारत से तंग आकर उनके घरों पर शिकायत करने भी आते थे । इन बच्चों की मां शिकायत लेकर आने वाले लोगों से क्षमा मांगती थी और घर लौट आने पर कान गरम किए जाते थे । लेकिन, इन सब बातों का इन पर कोई भी असर नही होता था और शिकायत लेकर आने वाले लोगों को यह तीनों बच्चे और भी परेशान करते थे ।

*

*

परीक्षाफल निकला

विजय की मां अभी थाली में आटा ही गूंथ रही थी कि जीने पर उसने विजय की आवाज सुनी। उसे यह तो पता था कि उसके बेटे का आज परीक्षाफल निकलने वाला है और उसका यह नटखट बेटा किसी भी प्रकार पास नही हो सकता था परन्तु उसका बेटा इस तरह सीटी बजाता हुआ और रोज की तरह हंसता हुआ आयेगा, इसका उसे विश्वास न था।

विजय ने घर पर आते ही अपने परीक्षाफल का कार्ड अपनी मां के सामने फेंक कर कहा—लो, मां एक रुपया दे। आज पूरा एक रुपया लूगा। देख, मै सारी क्लास में प्रथम आया हूं।

उसकी मां के लिए यह एक और भी आश्चर्य की बात थी। उसने आटा गूथते हुए ही विजय का कार्ड देखा और फिर कुछ सोचकर बोली,—क्या यह सच है ?

'हां मां, बिल्कुल सच। मैं अपनी क्लास में प्रथम आया हूं। तुम्हें विश्वास क्यों नहीं आता।

मै झूठ कभी नहीं बोलता यह तो तुम जानती हो हो।—विजय ने कहा।

उसकी मां को अपने बेटे की बात पर विश्वास हो गया। उसने अपने हाथों को जल्दी से धोया और विजय को चूम कर एक रुपया देते हुए कहा—शाबास बेटा, मै तुझ से आज बड़ी खुश हूं। तेरे पिता जी—रोज मुझे ताना देकर कहते थे कि तूने बिज्जू को चौपट कर रक्खा है। आज मै उनसे तेरा कार्ड दिखाकर—कहूंगी कि लो देखो मेरा बेटा पढ़ने में भी—फर्स्ट है।

विजय ने मां के हाथ से जल्दी से रुपया छीन लिया और सीटी बजाते हुए घर से बाहर चला गया।

शाम को विजय के पिता जी को विश्वास न हुआ। वह बोले—बिज्जू की मां, इसमें भी उसकी कोई शरारत है। मै अभी ही हेडमास्टर के घर जाता हूं और सही बात मालूम करके आता हूं। जरूर ही बिज्जू ने हमें गलत कार्ड लाकर दिया है।

विजय के पिता जी सीधे हेडमास्टर के घर पहुंचे। उन्होंने विजय का कार्ड उनके सामने रख दिया।

हेडमास्टर साहब ने कार्ड देखकर मुस्कुराते हुए कहा—बधाई है आपको। आपका लड़का क्लास में फर्स्ट आया है।

हेडमास्टर की बात सुनकर विजय के पिता को और भी आश्चर्य हुआ। वह मुंह फाड़े रह गए और बोले—क्या अब स्कूल के नियम बदल गए है। क्या अब शरारती लड़के फर्स्ट करके पास कर दिए जाते है और पढ़ने वाले सीधे सादे लड़के फेल कर दिए जाते है।

उनकी बात सुनकर हेडमास्टर साहब जोर से हँस पड़े। उन्होंने कहा—नही, ऐसी बात नही है। आपका बेटा विजय कुमार बडा ही तेज बुद्धि का है। वह शरारती अवश्य है और घर पर भी किताब नहीं पढ़ता परन्तु क्लास में अपने शिक्षकों की बातें ध्यान पूर्वक सुनता है। वह बडा तेज और होनहार बालक है। शायद आप यह समझते होंगे कि दिनभर किताब पढने वाले बच्चे ही अच्छे और तेज बुद्धि वाले होते है। नही, ऐसा नही है। जो बच्चे खेलते नही, बाग में नही जाते उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता और स्वास्थ्य ठीक न रहने के कारण उनकी बुद्धि भी तेज नहीं रहती। आपका विजय कुमार अच्छे स्वास्थ्य और

तेज बुद्धि वाला है।

विजय के पिता को हेडमास्टर साहब की बातों मे सतोष मिला। वह खुशी खुशी घर आए। उन्होंने जेब मे दो रुपये निकाल कर विजय की मा को देकर कहा—हमारा विजय होनहार और तेज बुद्धि वाला है। वह सचमुच अपनी कक्षा मे प्रथम आया है। यह रुपये उसके मिठाई के लिए है। यह उसे दे देना। आज मै सचमुच बहुत खुश हूँ।

रात को विजय के घर लौटने पर अच्छा स्वागत हुआ। उसे दो रुपये के साथ-साथ रबड़ी भी खाने को मिली। आज उसके पिता ने जो उससे हमेशा नाराज रहते थे अपने साथ बैठा कर उसे खाना खिलाया।

इसी प्रकार विजय के दोनों साथियों, विमल और मोहन का भी घर पर स्वागत हुआ। वह भी अच्छे नम्बरों से पास हुए थे।

दूसरे दिन इन तीनों दोस्तों ने बाजार मे जाकर खूब मिठाई खाई और नदी किनारे जाकर खूब सैर की। पेड़ पर बैठे बन्दरों को लकड़ी दिखाकर चिढाने में उन्हें बड़ा मजा आया।

गर्मी की छुट्टियां

अब गर्मी की पूरे दो महीने की छुट्टियां आगई। चारो ओर तेज और गर्म हवा चलने लगी। नदी का पानी गर्म होकर भाप बनने लगा। पक्षी पेडो की टहनियो पर पत्ते की शीतल छाया मे बैठकर विश्राम करने लगे।

स्कूल बन्द होने के कारण बच्चे दोपहर मे या तो सो जाते या फिर घर में ही बैठे शाम को उडाने के लिये पतंग बनाते। कभी कभी वह कैरम भी खेल कर अपना मन बहला लेते थे। घर के बाहर इतनी तेज धूप होती थी कि वह वहां जाकर न गुल्लीडण्डा खेल सकते थे और न ही नदी किनारे जाकर बन्दरों को चिड़ा सकते थे।

विजय बहुत परेशान था। घर में दिन भर बैठे रहना उसे पसन्द न था। दो चार दिन तो किसी प्रकार काट दिये परन्तु जब बहुत सारी पतंगें बनाकर उसने इकट्ठी करली और कैरम में उसने अपने सभी साथियों को कई बार हरा दिया तो कुछ नई बातें उसके दिमाग में आने लगीं।

वह शाम को उदास कुछ सोचता हुआ अपनी छत पर बैठा था। इसी समय मोहन और विमल भी उसकी छत पर मुंडेर फांद कर आ गए।

विजय को उदास देखकर विमल ने कहा—ओ श्री विजय कुमार जी, क्यों घोंघे की तरह मुँह फैलाये आप बैठे है। जरा आसमान की ओर तो देखो। चांद, तारा, भेड़िया और नीलम परी कैसे उड़ रही है। चलो हम लोग भी एक पेंच लड़ा डालें।

लेकिन विजय चुपचाप बैठा रहा। मोहन ने कहा—क्यों भाई नटखट, आज पतग न उड़ा कर क्या कोई नई योजना बना रहे हो ?

विजय को, अपने को मोहन द्वारा नटखट कहा जाना पसन्द न आया। वह आंखें फाड़कर उसे देखने लगा।

मोहन इस बात को ताड़ गया। वह बोला—मुझे माफ़ करना, तुम्हारा नटखट नाम इतना पक गया है कि मेरे मुँह से यूँ ही निकल गया। भाई माफ करो। अच्छा, एक मजेदार बात सुनो। आज जानते हो कौन सा दिन है। आज मंगलवार है। चलो मदिर चले। पुजारी जी को उल्लू बनाकर परसाद खायेंगे।

मोहन के प्रस्ताव को सुनकर विजय के चेहरे पर हंसी दौड़ आई। वह हंसता हुआ उठकर चप्पल पहन कर बोला—हां मैं तो भूल ही गया था, चलो चलें।

तीनों घर से बाहर आए और मंदिर की ओर चलने लगे। रास्ते में विजय ने कहा—यार मोहन और विमल! अभी पूरे दो महीने गर्मी की छुट्टी काटनी है। घर पर दिन भर बैठे-बैठे मेरा मन तो लगता नहीं। घर से बाहर धूप इतनी तेज होती है कि कहीं जा भी नहीं सकते। मै तो परेशान हूँ। आज इसीलिए मैं उदास बैठा था।

विमल ने कहा—भैय्या विजय तुमने मेरे मन की बात कह दी है। मै तो खुद बहुत परेशान हो गया हूँ। आज सचमुच मै तुम दोनों से यही कहने वाला था कि कोई उपाय सोचना चाहिए ताकि हम लोगों की यह छुट्टी खुशी से कट जाए।

मोहन ने कहा—सचमुच मै भी आज इसी बारे में बात करने वाला था। घर पर तो मै अपने बड़े भैय्या से परेशान हूँ, कभी कहेंगे कि पान लाओ, कभी कहेंगे कि अम्मा की नजर बचाकर एक सिगरेट ले आओ, कभी खुद तो लेट जायेंगे और मुझे कहेंगे कि

मेरा पैर दाब दो। अगर दो आने का लालच न होता तो मै कभी भी यह काम न करता। मैं तो सचमुच बड़ा तंग आगया हूँ। कोई न कोई तरकीब तो अब निकालनी ही पड़ेगी।

विजय ध्यान से अपने दोनों मित्रों की बात सुनता रहा। मोहन ने कहा—मेरे विचार से आज रात को सोने से पहले हम लोगों को एक सौ बार हनुमान जी का नाम लेकर सोना चाहिए। वह सपने में हम लोगों को इस मुसीबत से जरूर छुटकारे का कोई उपाय बतायेंगे।

विजय बोला—मोहन तुम मूर्ख हो। हनुमान जी जैसे बड़े देवता को ऐसी छोटी सी बात के लिए क्यों कष्ट दिया जाए, मेरा अपना ही दिमाग काफी है। तुम दोनों परेशान न हो। मै आज रात भर में कोई न कोई तरकीब जरूर निकाल लूंगा। तुम दोनों मुझे कल सवेरे पांच बजे गली के मोड़ पर मिलना। तीनों नदी किनारे चलेंगे। फिर मै वहीं पर तुम लोगों को कोई न कोई तरकीब जरुर बताऊंगा।

विजय इतना कह कर चुप हो गया। थोड़ी देर बाद बोला—मेरे दोस्तों, यह तो हुई कल की

बात। इस समय तो और ही काम करना है। पुजारी जी को भी तो कोई चकमा देकर सारा परसाद हड़प करना है। जल्दी से कोई तरकीब निकालनी चाहिए।

विमल का दिमाग ऐसे समय कुछ तेजी से काम करता था उसे अपने सामने ही कल्लू धोबी का गधा खड़ा नजर आ गया। वह जोर से बोला—बस दोस्तों काम बन गया। आज पुजारी जी भी क्या याद करेंगे ?

मोहन बोला—कुछ बतायेगा या फिर यूं ही बकवास करता जायेगा। जल्दी बोल, क्या बात है।

विजय अब तक बिल्कुल चुप था। ऐसे मौके पर चुप रहने से उसकी धाक कम होने का डर था। उसे ऐसा लगा कि कहीं विमल बाजी न मार ले जाये। वह फौरन बोल उठा, ठीक है, विमल ने चाहे जो कुछ भी सोचा हो, जल्दी से दोस्तो एक रस्सी ले आओ।

मोहन की समझ में कुछ न आया, वह चिढ़ गया और जोर से बोला—तुम दोनों कुछ बताओगे या भिर यूँ ही खिचड़ी पकाते चले जाओगे।

विजय अपने दोनों दोस्तों को एक पेड़ के नीचे ले गया। धीरे से बोला, सुनो, बताता हूँ। विमल

इस गधे को बांधकर पीछे से चुपचाप पुजारी जी की बगिया में चला जायेगा। तुम और मोहन पेड़ से एक रस्सी बांधकर अंधेरे में छुपे रहोगे। विमल इस कल्लू धोबी के चीपों राजा को मेरे इशारे पर डंडे जमायेगा और पुजारी जी अपनी बगिया में इस चीं पों राजा की आवाज सुनकर उसे भगाने के लिए दौड़ते हुए आयेंगे और उसी समय तुम उनके पैर में रस्सी फंसा कर उन्हे गिरा देना। उनके गिर जाने पर तुम और विमल उन्हें रस्सी से बांधकर जल्दी से दाढ़ी वाले बाबा की कुटिया पर आकर मुझ से मिलना। मैं परसाद की थाली एक दो तीन करके तुम दोनों की वहीं राह देखूँगा।

मोहन खुशी से उछल पडा। उसने कहा—बड़ी अच्छी तरकीब है। आज तो थाली में आरती के पैसे भी हथियाने चाहियें। परसाद के साथ साथ थाली में के खनाखन-खनाखन पैसे भी हथियाने चाहियें।

विजय बोला—हाँ, यह तो मै भूल ही गया था। जाओ,जल्दी करो। आरती अब खत्म ही होने वाली है।

बेचारे पुजारी जी

पुजारी जी के लिए मंगल का दिन शुभ होता है। हफ्ते भर से वह इसी दिन की आस लगाए रहते थे। आज वह रसगुल्ले, बरफी और पेड़े देख-देख कर खुश हो रहे थे। उन्हें क्या पता था कि आज उनकी शामत आई है। नौ बजे जब मंदिर से सभी लोग चले गए तो उन्होंने किवाड लगाकर दक्षिणा में आए पैसों को गिना। पूरे पांच रुपये और दो नए पैसे थे। तीन बार पैसों को गिनकर उन्होंने मन ही मन बुदबुदा कर कहा—बुरा हो इस सरकार का। जब से नया पैसा चला है चढ़ावा कम ही होता जाता है। लोग अब एक नया पैसा चढ़ाते है। शिव,शिव! पुजारी जी ने परसाद की थाली में पैसा गिनकर रक्खा और मन्दिर में ताला लगाकर कुटिया की ओर चलपड़े।

उसी समय बगिया में ची पों, ची पों कर बड़ी जोर से रेंक हुई। फिर विजय और उसके साथियों के द्वारा रचा गया सारा खेल शुरू हुआ। बेचारे

पुजारी जी रातभर बँधे रहे। रातभर भूख और प्यास के मारे उनका बुरा हाल रहा।

इधर तीनों दोस्त मिठाई पर हाथ साफ कर आपस में पैसों का बंटवारा कर आनन्द मना रहे थे। इन तीनों दोस्तों ने हृदय से पुजारी जी को धन्यवाद दिया और उन्हें जो कष्ट पहुँचा उसके लिये हनुमान जी से माफी मांगी।

तीनों साथी अपने अपने घर लौटे। रात काफी हो गई थी। वह चुप चाप अपनी खाटों पर जाकर सो गए। परन्तु उनकी माताएँ उनका इन्तजार कर रही थी। पास होने की खुशी में उन पर डांट तो नही पड़ी परन्तु देर से आने का कारण जरूर पूछा गया। तीनों दोस्तों ने अपनी-अपनी माताओं से सवेरे ठीक पाँच बजे जगा देने के लिये प्रार्थना की क्योंकि उन्हें नदी किनारे जाना था। मां जैसा कि डरपोक हुआ करती हैं और खासकर अपने बच्चों को नदी पर नहीं जाने देना चाहतीं, सो सवेरे जब पांच बज गए तब भी किसी ने अपने बच्चों को नहीं जगाया।

सवेरे पांच बजे इन तीनों की भी नींद नही खुली। रात को बहुत सारी मिठाई खा जाने के कारण और पुजारी जी की व्यवस्था करने में यह सब

बहुत थक गए थे। अब सवेरे ठण्डी हवा मे खर्राटे भर रहे थे।

धूप जब काफी चढ़ आई तब विजय हड़बड़ा करे उठ बैठा। उठते ही जल्दी से उसने समय देखा सात बज गए थे। ओह, काफी देर हो गई। ऐसा कहकर उसने अपनी खाट पर खड़े होकर विमल और मोहन की छत पर झांका। वह दोनों भी आंखे मल रहे थे। विजय ने सीटी बजाकर उन दोनों को अपनी छत पर बुलाया।

विजय ने अपने दोस्तों से कहा—देर होगई है. परन्तु कोई बात नहीं। हम लोग आज नहा धोकर और खाना खाकर दस बजे नदी किनारे चलेंगे। वहीं चलकर बातें होंगी। तुम दोनों जल्दी से नहा धोकर और खाना खाकर ठीक दस बजे मुझसे गली के मोड़ पर मिलो। हां! एक बात का ध्यान रखना। अब हम अपनी मां से कुछ भी नही कहेगे। उन्होंने जानकर ही हम लोगों को नही जगाया। शायद उन्हे हमारा नदी किनारे जाना पसन्द नहीं है।

तीनों दोस्त जल्दी जल्दी छत से नीचे उतर कर आए। वह आज अपनी अपनी मां से नहीं बोले।

उनको माताएँ भी उनके नाराज़ होने का कारण जानती थीं।

खैर जल्दी जल्दी नहा धोकर तैयार होकर उन तीनो ने अपनो पतंग आदि को गिनकर सम्भाला। इतने में खाना बनकर तैयार हो गया। खाना खाकर विजय सबसे पहिले गली के मोड़ पर पहुँच गया। थोड़ी देर में मोहन भी वहा पहुँच गया, परन्तु विमल अभी तक नही आया था। उन दोनों को विमल की लापरवाही पर बड़ा क्रोध आ रहा था। इतने में विमल भी दौड़ता दौड़ता वहां आ पहुंचा।

विजय ने डांटकर कहा-क्यों बे तू हमेशा ऐसे ही करेगा। कभी भी ठीक वक्त पर काम नही करता।

विमल ने कहा—भैया विजय, ऐन मौके पर भाई सहाब ने तम्बोली की दुकान से सिगरेट लेने भेज दिया। तम्बोली भी बूढा आलसी ठहरा। पूरे पांच मिनट लग गए।

मोहन ने कहा—अच्छा अच्छा! चलो जल्दी-जल्दी नदी किनारे पहुँच कर किसी वृक्ष के नीचे बैठें। इस कड़ी धूप में तो जान ही निकल जायेगी।

तीनों मित्र तेजी से नदी की ओर जाने लगे।

रास्ते मे मन्दिर पड़ा। चबूतरे पर अंगोछा पहने पुजारी जी बैठे थे। उन्हें देखकर, यह तीनों मित्र चुप चाप निकल जाना चाहते थे परन्तु विजय के ऊपर पुजारी जो की निगाह पड़ ही गई।

उन्होंने जोर से पुकारा—नट खट, ओ नटखट, इधर तो आ। विजय सहम गया। वह हिम्मत कर पुजारी के सामने आया। मोहन और विमल भी चुप-चाप उसके पीछे हो लिये।

पुजारी जी ने बड़ी तेज आवाज मे पूछा—क्यों नटखट! कल शाम को तू कहां था? और मोहन तुम·····और विमल·····कहा थे। साफ़-साफ़ बतलाओ?

विजय ने कहा—हम तो तीनों कल शाम को घर की छत पर पतग उड़ा रहे थे और फिर खाना खाकर सो गए। कल तो हम लोग घर से निकले ही नहीं। क्यों भाई मोहन और विमल।

मोहन और विमल ने भी उसकी हां में हां मिलाते हुए कहा—हां, हा, सात बजे तक तो हम तीनों पतंग ही उड़ाते रहे और फिर इतना थक गए थे कि खाना खाते ही सो गए।

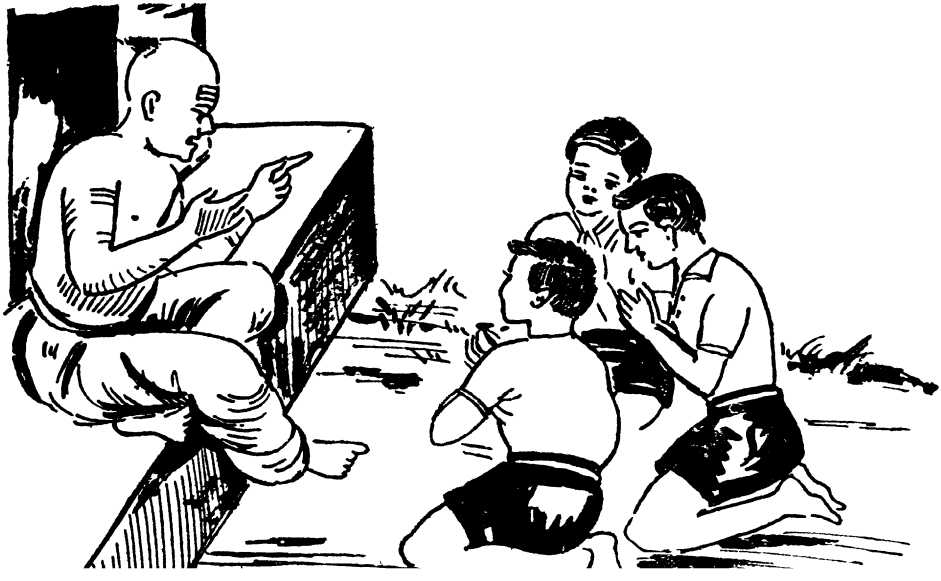

पुजारी जी ने अपने शब्द को कुछ मुलायम कर कहा—बेटा, किसी को बगिया में जाते तो नहीं देखा।

तीनों ने एक साथ ही कहा—नहीं, नहीं, हमने तो नहीं देखा। हम लोग तो घर से निकले ही नहीं।

पुजारी जी बड़े गौर से तीनों को देखने लगे। विजय ने जल्दी से उन्हें प्रणाम किया। मोहन और विमल ने भी उनके चरण छुए।

तीनों जल्दी-जल्दी आगे बढ़ गए और जब वह नदी किनारे पहुँचे तो धूप तेज हो आई थी।

नदी किनारे

धूप तेज थी, काफी तेज। नदी के किनारे नीम, पीपल और बड़ के घने और सायेदार वृक्ष थे। वृक्ष पर तोते, कौवे और अनेक प्रकार की रंग विरंगी चिड़ियां बैठी हुई, तेज हवा और नदी की लहरों का खूब आनन्द ले रही थीं। बन्दर वृक्ष के नीचे घनी छाया में दो दल बनाकर कबड्डी खेल रहे थे। थोड़ी दूर पर मिट्टी के बड़े बड़े धोबियों के नांद रक्खे हुए थे। बांस के लम्बे-लम्बे डण्डे को रस्सी के सहारे बांधकर कपड़े की एक लम्बी कतार को फैलाकर धोबी सूखा रहे थे। उनके पास ही कई गधे जिनकी पिछली दोनों टांगें बंधी थीं, घास चर रहे थे। किनारे पर सैकड़ों नावें बंधी थी। इन नावों में कुछ की छतें खुली थीं और कुछ पर बांस के सहारे चटाई तान कर छतें ढक दी गई थीं। मल्लाह इन सायेदार नाव के अन्दर बैठकर चिलम पी रहे थे। नदी की लहरों के बीच में मछलियाँ कभी कभी नजर आजाती थीं। वह अपने शीतल घर से निकल कर नीले आसमान की ओर देख लेतीं और फिर पलक झपकते ही तेज गर्मी

को न सहन कर सकने के कारण फिर अपने घरों को वापस चली जाती।

जब यह तीनों मित्र नदी किनारे पहुंचे तो सबसे पहले बन्दरों ने उन्हे देखा। वह इन्हें देखकर चीं चीं करने लगे। उन्होंने अपना खेल बन्द कर दिया और पेड़ पर चढ़कर अचरज भरी निगाहों से इन्हें देखने लगे। एक बूढे बन्दर ने ची चीं कर कहा—अरे दुष्टो ! इस दुपहरी में तुम क्या करने यहां आए हो। घर जाओ और आराम करो। बन्दरियों ने भी चीं-चीं कर बूढे बन्दर की बात का समर्थन किया। उन्होंने कई बार ची ची कर इन बच्चो को समझाया पर यह तीनों दोस्त उनकी बात न समझ सके। उनके चीं ची करने पर इन लोगो ने डण्डे से उन्हें धमकाया।

बूढे बन्दरों को जवान बन्दरों ने डाट कर कहा—लाख मना करने पर भी सबके बीच मे बोलते हो। इन मनुष्य के बच्चों को समझाने का फल देख लिया, अब भुगतो और लाठी की मार सहो।

बूढे बन्दर ने चीं ची कर अपने बेटों से कहा—ठीक है भाई। हम इन मनुष्य के बच्चों को अपना ही बेटा पोता समझते हैं, इसीलिए जी नहीं माना तो

बोल पड़े। मुझे क्या मालूम था कि दुम कट जाने से और पैरों पर खड़े होकर चलने के बाद यह अपने दादा बाबा को भी भूल जायेंगे।

विजय ने अब लाठी से बन्दरों को मारना शुरू कर दिया था। बूढा बन्दर चीं चीं करता हुआ बरगद के पेड़ के सिरे पर चढ़ गया। दूसरे बानर गण भी इधर उधर तितर बितर हो गए।

तीनों साथी एक बरगद के घने सायेदार वृक्ष के नीचे बैठ गये। रूमाल से अपने माथे पर आये पसीने को उन्होंने पोंछा और थोड़ी देर तक दम लेने के लिए खामोश रहे।

मोहन ने कहा—अच्छा तो विजय भैया, अब आगे का क्या प्रोग्राम है।

विजय चुप रहा।

विमल बीच ही में बोल बैठा। मै कल रात को सोते हुए हनुमान जी का स्मरण कर सोया था। सपने में मुझे उनके दर्शन हुए। वह विजय के व्यवहार से काफी दुःखी थे। वह कह रहे थे कि कल विजय ने हमारी बड़ी बेइज्जती की है। इस बार मैं उसे क्षमा करता हूँ। उसने मेरे ऊपर विश्वास नहीं किया।

उन्होंने मुझे आदेश दिया है कि मैं तुम लोगों के कान पकड़ कर पहिले एक-एक तमाचा लगाऊँ और फिर उसके बाद उन्होंने हम लोगों के लिए जो प्रोग्राम बताया है उसे तुम लोगों से कहूँ।

विजय को विमल की बात पर विश्वास नहीं हुआ। परन्तु मोहन ने विमल को गम्भीर पाकर और उसके चेहरे पर हंसी का बिल्कुल भी चिह्न न पाकर अपना कान उसके सामने कर दिया।

विमल ने एक हाथ से मोहन का और दूसरे हाथ से विजय का कान पकड़ कर पहले जोर से खींचा और फिर नाखून से चीटीं कर चिटियाया।

इन दोनों के कान लाल हो आए थे। विमल ने कान छोड़कर एक-एक तमाचा दोनों को जड़ कर कहा—अब तुम दोनों आंख मूंद कर हनुमान जी का सौ बार स्मरण करो और उसके बाद मैं उसकी आज्ञा तुम्हें सुनाऊंगा।

विजय और मोहन को विमल पर बड़ा क्रोध आ रहा था। पर क्या करते? दोनों ने उसकी आज्ञा का पालन किया।

इधर विमल का दिमाग बड़ी तेजी से दौड़ रहा था। वह जल्दी से कोई कहानी गढ़ना चाहता था।

वह जानता था कि अगर उसके साथियों को जरा भी संदेह हो गया तो वह उससे इसका बदला अवश्य लेंगे।

विजय और मोहन दोनों ही 'जय हनुमान जय हनुमान' कह कर जोर-जोर से जप रहे थे और विमल एक अच्छी सी कहानी हनुमान जी के आदेश की गढ़ रहा था।

आखिर उन दोनों का नाम जपना समाप्त हुआ और उन्होंने अपनी आंखें खोलीं। एक साथ दोनों ने विमल से प्रश्न किया—बतला ! अब क्या कहा है हनुमान जी ने।

विमल गम्भीर था। वह अब तक कुछ फैसला न कर सका था। परन्तु उसे कुछ न कुछ बोलना जरूरी था। वह बोला—हनुमान जी ने मुझे नदी की ओर इशारा किया और कहा कि तुम तीनों नाव में सवार हो कर नदी की सैर करो और आस पास के गांव में जाकर आम तोड कर खाओ। यह आदेश देकर वह चले गये।

विजय नाव पर सैर करने की बात सुनकर उछल पडा। मोहन को पेड़ पर चढ़कर आम खाने

के विचार से ही आनन्द हो आया। दोनों ने विमल की पीठ ठोक कर ताली बजाई।

विजय ने अंत में कहा—हम लोग नाव पर सैर करेंगे और आम खायेंगे। परन्तु, खबरदार, इस बात की चर्चा घर में बिल्कुल मत करना वरना हम तीनों की शामत आ जायेगी।

विमल और मोहन ने कान पकड़ कर किसी से भी इसका जिक्र न करने की कसम खाई।

—: o :—

नाव की सैर

नाव की सैर करने का तो तीनों मित्रों ने फैसला कर लिया परन्तु नाव कहां से मिले ? उन छोटे बच्चों को कौन अपनी नाव देता। अगर किसी प्रकार यह लोग किनारे से छुपकर नाव खोल भी लेते, तो उसे चलाते कैसे। इन लोगों को तो चप्पू पकड़ना भी नहीं आता था। इस विचार से तीनों के चेहरे उदास हो गए। उन्हें थोड़ी देर पहले की अपनी खुशी पानी के बुलबुले की तरह नष्ट होती दिखाई पड़ने लगी। परन्तु ये तोनों बच्चे चुप बैठने वाले नहीं थे। विजय की बुद्धि ऐसे समय ही तो काम देती थी। परन्तु काफी सोचने के बाद भी आज उसको बुद्धि उसका साथ नहीं दे रही थी।

विमल ने कहा—क्यों न हम किसी मल्लाह को अपने साथ ले लें जो नाव खेने में हमारी सहायता करे।

मोहन ने कहा—विमल तू निरा बुद्धू है। भला कौन आदमी हमारा साथ देगा और अगर किसी मल्लाह के सामने हमने अपने विचार रखे तो वह घर पर सब कह देगा। सारा गुड़ गोबर हो जायेगा।

विजय मौन था परन्तु अपने साथियों की बात ध्यान से सुन रहा था। अचानक उसके दिमाग में एक विचार आया और वह खुशी से उछल पड़ा। वह बोला—ठीक है काम बन गया। हम लोग नाव की सैर करेंगे।

विमल और मोहन ध्यान से उसकी बात सुन रहे थे। विजय ने आगे कहा—हम गोपाल को अपना साथी बनायेंगे। वह नाव चलाना जानता है और उसके बाप की चार नावें है। वह अपनी चार नावों में से एक जरूर हमारे लिए अपने बाप से ले लेगा।

विमल बोला—वही गोपाल जो अपने साथ पढता है न! अरे, वह तो काला कलूटा बडा गंदा रहता है। उसका बाप भी नशा करता है। अगर घर पर पिताजी को मालूम पड़ गया तो अपनी तो खैर नहीं।

विजय को विमल की बात पर गुस्सा आगया। वह बोला—देखो बिमल! अगर तुमने फिर ऐसी गंदी जैसी बात करनी न छोडी तो हम तुम्हे अपने साथ न रखेंगे। अबे उल्लू! अपना काम निकालना है। हम गोपाल को कल के पुजारी जी वाले रुपये देकर अपना दोस्त बनायेंगे। गोपाल नाव चलायेगा और सब

उससे नाव चलाना सीखेंगे। घर वालो को तो पता ही नहीं चलेगा फिर हमारी शामत कैसे आयेगी।

मोहन ने भी विजय की बातों का समर्थन किया। विमल ने कान पकड़ कर अपनी गलती के लिए माफी मांगी।

विजय ने कहा—तो फिर मै जैसे कहता हूँ वैसे ही करो। चलो निकालो जेब से कल के पैसे।

दोनों ने जेब से सारे पैसे निकाल कर विजय के हाथ पर रख दिए।

विजय ने पैसों को गिना और फिर विमल से कहा—जा गोपाल को यहाँ बुला ला। हम लोग तेरा यहाँ इन्तजार कर रहे हैं।

विमल दौड़ा-दौड़ा गया और गोपाल को बुला लाया। विजय ने गोपाल से सारी बात बतलाई और पैसों को उसे देते हुए कहा—यह तुम्हारी नाव का किराया है। हम लोगों की इच्छा पूरी करना तुम्हारे हाथ में है। हमारी इच्छा जरूर पूरी करो वरना हम लोग तुम्हें कभी भी अपना दोस्त नहीं बनायेंगे।

गोपाल ग़ौर से विजय की बात सुनता रहा। फिर बोला—विजय, तुम लोग मेरे दोस्त हो और

नदी किनारे आए हो, इसलिए मेरे मेहमान भी हो। मैं तुम लोगों को मुफ्त में नाव की सैर कराऊंगा। एक भी पैसा नहीं लूँगा। यह पैसे वापस ले लो। इसकी बाजार से मिठाई ले आना। नाव पर बैठकर चारों दोस्त खायेंगे। पर आज नहीं। आज बापू जागते हैं। कल चलेंगे। कल मैं सारा प्रबन्ध कर रखूंगा। कल तुम लोग सवेरे ही मुझ से मिलो।

दूसरे दिन विजय विमल और मोहन सबेरे ही नदी किनारे पहुँच गए। उस रात को यह तीनों

दोस्त सोए ही नहीं। नाव में सैर करने का उन्हें इतना चाव था कि कहीं सवेरे उनकी नींद न खुल पाये ये रात भर आसमान की ओर देखते हुए और सवेरे सवेरे नाव की सैर करने के विचार से प्रसन्न होते हुए जागते रहे। गोपाल भी उनका इंतजार कर रहा था। इन तीनों साथियों के आते ही उसने एक नाव खोली। एक-एक कर तीनों साथी उसमें बैठ गए। सबसे पीछे गोपाल भी नाव को जरा बीच पानी में ढकेल कर कूद कर नाव पर चढ़ आया। उसने अपने दोनों हाथों में पतवार सम्भाल ली और नाव नदी की धारा की ओर बढ़ा दी। नाव के ऊपर चटाई तनी थी। नाव धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी। विमल विजय और मोहन को ऐसा मालूम पड़ने लगा जैसे वह एक कोठरी में बैठे हुए झूला झूल रहे हों। गोपाल इस समय सभी साथियों के बीच 'हीरो' बना हुआ था। वह अपने साथियों को बीच में बतलाता जाता था—देखो, बरसात में यहाँ तेज धार होती है। यहाँ चक्कर है। एक बार मेरे बापू की नाव इस भंवर में फंस गई थी। बड़ी मुश्किल से वह बच पाये, आदि-आदि।

तीनों गोपाल की बात ध्यान से सुन रहे थे और

मन ही मन उसकी नाव की तारीफ करते थे।

नाव बीच धारा में बही चली जा रही थी। गोपाल को भी चप्पू नहीं चलाना पड़ रहा था चूंकि नाव बहाव की ओर जा रही थी। विजय को चप्पू चलाने का शौक था। वह गोपाल की बगल में आ बैठा और एक पतवार उससे लेकर चलाने लगा। परन्तु उसके हाथ जल्दी ही थक गये। मोहन और विमल ने भी एक-एक बार पतवार लेकर चलाना शुरू किया परन्तु वह भी जल्द ही थक गये। गोपाल इस पर हँस पड़ा और बोला-अरे नाव चलाना इतना आसान नहीं है। पतंग उड़ाने जैसा इसमें उंगली से डोरी नहीं चलाई जाती है। यह लकड़ी है, लकड़ी। हाथ में छाले पड़ जाते हैं तब कहीं पानी की धार को चीर कर नाव चलाई जाती है।

विजय ने गोपाल से कहा—भाई गोपाल, इस मामले में तो तुम आज हमारे लीडर हो। हमें इस बात का दुःख है कि तुम्हें अभी तक हम लोगों ने अपना साथी नहीं बनाया था। हमें इसके लिए माफ करदो।

विमल बोला—गोपाल भैया, मैंने तुम्हें एक बार

अपनी गेंद खेलने से मना किया था, इसके लिये भी हमें माफ कर दो।

गोपाल बोला—अच्छा-अच्छा ! आज से मैं भी तुम्हारा साथी बन गया, पर लीडर तो नटखट भैया ही रहेंगे। मैं तो नाव चला सकता हूं। मेरा दिमाग नटखट भैया ऐसा नहीं है। न बाबा न मै लीडर नहीं बन सकता।

विजय ने जरा सीना निकाल कर कहा—खैर कोई बात नहीं। मैं ही तुम्हारा लीडर बना रहूंगा। पर यह क्या ? बातों ही बातों में हम कितनी दूर निकल आये। जरा नाव किनारे पर तो लगाओ। देखो किनारे पर आम के कितने सारे पेड़ नजर आते हैं। चलकर आम खाया जाये। फिर शाम से पहिले घर भी तो लौटना है नहीं तो हम सभी लोगों की शामत आ जायेगी। गोपाल ने नाव किनारे लगा दी। एक-एक कर चारों साथी नाव से नीचे उतरे। गोपाल ने नाव को रस्सी के सहारे एक बड़े पत्थर से बांध दिया।

चारों दोस्त उछलते कूदते दौड़ते हुये आम के पेड़ के पास आए। पेड़ पर पीले पीले पके हुए आम लगे थे। विमल से आमों को देखकर रहा नहीं गया।

उसके मुंह में पानी भर आया। वह जल्दी से दौड़ता हुआ एक पेड़ पर चढ़ गया। पर पेड़ के ऊपर पहुंचते ही उसने देखा कि वहां तो बन्दरों ने अपना अड्डा जमा रखा है। एक बन्दर ने उसको देखकर मुंह फाड़ कर घुड़की लगाई। विमल डर गया। जल्दी जल्दी वह बिना आम खाये ही मुंह में पानी भरे हुए नीचे उतर आया। विजय मोहन और गोपाल इस बात पर खिलखिलाकर हँस पड़े। विमल झेंप गया।

गोपाल दौड़कर नाव पर से पतवार उठा लाया। पतवार से उसने आम तोड़ने शुरू कर दिए। विजय विमल और मोहन तीनों मिलकर आम बटोरने लगे। जब बहुत सारा आम इकट्ठा हो गया तो चारों साथी आम को अपनी कमीज की झोली में भरकर नदी किनारे आ गए। वह आम को नदी किनारे धोकर खाने लगे। इस समय उन चारों को कोई चिंता न थी। विजय के लिए आज का दिन बड़ी खुशी का था। घर में बैठकर दम घुटाने वाली गर्मी में मां के इशारे पर आज उसे नहीं चलना था। विमल तो अपने दोनों पैर नदी में डालकर आम को चूस-चूस कर गुठली नदी में फेंकता था। गुठली फेंकने से नदी में जो चक्कर बनता उससे उसे बडा आनन्द

आता था । जब तक यह चक्कर खत्म नहीं होता वह देखता रहता था और एक चक्कर के खत्म होने के बाद वह फिर दूसरी गुठली नदी में फेंक देता था ।

इसी प्रकार जब काफी समय गुजर गया तो मोहन ने कहा—दोस्तो आम तो खा लिये, चलो अब कुछ देर इस गांव की सैर भी करली जाए ।

मोहन की बात सभी को पसंद आयी । विजय ने जल्दी से अपने हाथ मुंह को धोया और बोला—चलो दोस्तो, चलें । गांव की सैर की जाए ।

सभी लोगों ने अपने मुंह हाथ धोए और विजय के पीछे पीछे चल दिए । गोपाल अपने दोनों हाथों में पतवार लिए सबके पीछे पीछे जा रहा था ।

चारों दोस्त आगे बढ़ते गए । आस पास के छायेदार पेड़ पर कोयल का मधुर गाना सुनकर उन्हें बड़ा आनन्द आ रहा था । यह चारों साथी काफी देर तक चलते रहे । वह नदी के किनारे से काफी आगे बढ़ आये थे । अभी तक उन्हें गांव का कोई आदमी दिखलाई नहीं पड़ा था । विमल इतनी दूर आजाने के बाद एकदम सुनसान जंगल में कुछ डर

सा गया और उसने कहा—विजय भैया—अब घर लौट चला जाए, देर हो जायेगी।

मोहन ने भी विमल की बात को ठीक बतलाया और लौट चलने को कहा।

परन्तु विजय को एक विचित्र आनन्द आ रहा था। उसने कहा—तुम लोगों ने बड़ा तंग कर डाला है। अरे! एक दिन में एक गांव को भी न देखेंगे तो फिर घूमने का मजा क्या? वह आगे बढ़ता ही गया।

लाचार होकर मोहन, विमल और गोपाल को उसके पीछे-पीछे चलना पड़ा।

धूप तेज थी। छायेदार पेड़ अब समाप्त हो गए थे। वह लोग नदी से काफी दूर आ गए थे। चारों साथियों को धूप और गर्मी के कारण बड़े जोर की प्यास लग आई थी। विजय अब भी आगे बढ़ा ही जा रहा था। विमल मन ही मन उस गाली दे रहा था। गोपाल भी झुँझला रहा था कि वह किन लोगों के चक्कर में पड़ गया है।

मोहन से अब आगे नहीं बढ़ा गया। वह एक दम बैठ गया और बोला—न बाबा न, मै तो अब

आगे नहीं चल सकता। मुझे तो बड़े जोर की प्यास लगी है। मुझसे अब नहीं चला जाता।

विजय का भी गला सूख गया था। लाचार हो कर वह वापस लौटने के लिए मुड़ा। उसे गाव तक न पहुँच सकने का काफी दुख था।

इसी समय मोहन उठते हुए चिल्ला पड़ा—वह देखो, वह सामने तम्बू दिखलाई देते हैं। शायद कोई बस्ती है।

विजय की आखें प्रसन्नता से चमक उठीं। वह जल्दी से बोला—चलो, चलकर वहां देखें। हमें वहां पानी मिल जायेगा।

इतना कह कर वह तेजी से दौड़ पड़ा। विमल और मोहन भी उसके पीछे-पीछे दौड़ने लगे। पर, गोपाल दौड़ न सकता था। उसके हाथों में पतवार थी। वह पतवार को कन्धे में रखकर तेजी से चलने लगा।

चारों साथी उस तम्बू के पास पहुँचे। वहाँ उन्हें एक नहीं पर सैकड़ों तम्बू दिखलाई पड़े। तम्बू के चारों ओर कांटेदार तार का घेरा पड़ा था। बीच मे एक दरवाजा था और इस पर एक चौड़ी तख्ती लटको

थी जिस पर लिखा था—'बच्चों का ग्रीष्म कैम्प ।'

चारों साथियों ने तख्ती को पढ़ा और सोचने लगे कि यह क्या है ?

विमल ने कहा—साथियो, मेरा कहना मानो तो भाग चलो । यहाँ बच्चे भगा कर लाये जाते हैं और पकड़ कर बन्द कर दिए जाते है ।

गोपाल ने भी अपनी पतवार को कसकर पकड़ते हुए कहा—हां, हां ! चलो भाग चले ।

इतने में खाकी कमीज और निकर पहने हुए कुछ लड़के उन्हें दिखाई पड़े । एक लड़के ने आकर बड़ी नम्रता से पूछा—आप लोग कौन है और क्या चाहते हैं ?

मोहन को बड़े जोर की प्यास लगी थी । उसने कहा—पानी·····पानी चाहिए ।

खाकी वर्दी पहने हुए लड़के इन चारों को अन्दर ले आए । इन लड़कों ने उन्हें बिस्कुट, किशमिश खाने को और पीने को शीशे के ग्लास में पानी दिया ।

किशमिश और बिस्कुट को देखकर चारों साथी एक साथ लपक कर उसपर हाथ साफ करने लगे ।

उन्होंने जी भर कर ठंडा पानी पिया। पानी पीने के बाद इनकी तबियत शान्त हुई। विजय बोला—आप लोग क्या यहां रहते है ?

एक लड़का बोला—हम लोग स्काउट हैं। गर्मी की छुट्टी में हम अपने स्कूल के अध्यापकों के साथ कैंप में आए हैं। हमारे कैंप में करीब दो सौ लड़के है। हम लोग अपने अध्यापकों की देख-रेख मे पास के गांव की सफाई करते है, सड़क बनाते हैं, बाग लगाते हैं और खेल ही खेल में समाज सेवा कर अपनी गर्मी की छुट्टियों को हंसी खुशी में बिताते हैं।

इन चारों साथियों को इनकी बात सुनकर बड़ा आनन्द आया। विजय तो एक दम बोल पड़ा—मित्र, क्या हम लोग भी इस कैंप में भरती हो सकते हैं ?

वह लड़का बोला—आप थके मालूम देते हैं। थोड़ी देर आराम कीजिए। हम लोगों के मास्टर जी थोड़ी देर में आते होंगे। उनकी आज्ञा से ही आप कैम्प में भर्ती हो सकते हैं।

चारों साथी काफी थके थे। उन लोगों ने अपने जूते उतार दिये। गोपाल ने अपनी पतवार एक कोने में रखदी और फिर चारों साथी पलंग पर लेट कर अपनो थकावट दूर करने लगे।

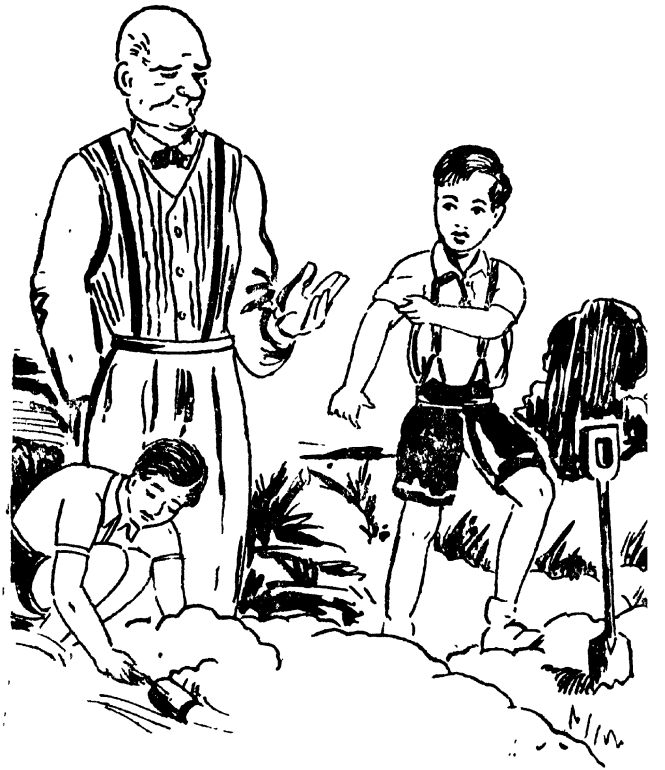

कैम्प में

दोपहर का समय समाप्त हो रहा था। कैम्प में अब काफी लोग जमा हो गये थे। चारों ओर चहल पहल थी। एक कोने में कुछ बच्चे खाना बना रहे थे। कई एक बच्चे सफाई कर रहे थे। कुछ बच्चे कपड़े साफ कर उन्हें सूखने को डाल रहे थे। इसी समय एक ओर काफी शोर सा सुनाई पड़ा। करीब सौ से ऊपर लोगों का झुंड आपस में बात करता हंसता कूदता चला आ रहा था। इस झुंड के आगे आगे चार पुरुष और उनके पीछे पीछे सैकड़ों बच्चे खुशी से उछलते आ रहे थे। सभी बच्चे खाकी निकर और कमीज पहने हुए थे। परन्तु, यह क्या ? इन सभी के हाथों में कुदाली क्यों है ? कहीं ये मज़दूर तो नहीं हैं ? पर नहीं, ये तो बच्चे हैं। स्कूल के बच्चे जैसे मालूम पड़ते हैं।

विजय और उनके साथियों की थकावट अब तक मिट गई थी। शोर सुनकर वह खाट से उठ खड़े हुए और बाहर निकल आए। गोपाल ने तम्बू से बाहर आते समय अपनी पतवार कोने से उठा ली।

विजय और उनके साथियों को इतने सारे बालकों को हाथ में कुदाली लेकर आते हुऐ देखकर बड़ा आश्चर्य हुवा। परन्तु शीघ्र ही जिस लड़के ने इनको जलपान कराया था, वह इनके पास आकर बोला—हमारे मास्टर जी आ रहे हैं। आओ हम उनसे तुम्हारा परिचय करायें। विजय और उनके साथियों का मास्टर जी ने हंसकर परिचय प्राप्त किया तथा उनके माता पिता और गाव का नाम पूछा।

विजय ने अपना और अपने साथियों का पूरा परिचय देते हुवे अपने साथियों के साथ वहां तक पहुंचने का सारा हाल सही सही कह डाला। सब कुछ कह लेने के बाद वह आंख नीची कर बोला—मास्टर जी, गर्मी की छुट्टी में हमारा मन घर पर नहीं लगता। हमें भी आप कैम्प में भर्ती कर लीजिये।

मास्टर जी विजय की बात सुनकर हंस पड़े। बोले—ठीक है, तुम लोग अपने माता पिता की आज्ञा लेकर हमारे कैम्प में आ सकते हो।

मास्टर जी की बात सुनकर चारों साथियों के चेहरे उदास हो गये। विमल और गोपाल एक साथ बोल पड़े—मास्टर जी, हमारे माता-पिता तो कभी भी

हमें कैम्प में रहने की इजाजत नहीं देंगे। अगर हम लोग घर लौटे तो फिर कभी भी यहां वापस नहीं आ सकते।

विजय और मोहन ने भी प्रार्थना करते हुए कहा-हां-हां मास्टर जी, हम लोग अब घर नहीं जा सकते। अगर घर जायेंगे तो हमे मार पड़ेगी। हम लोग आज सबेरे से ही घर से गायब हैं। अगर घर गए तो फिर निकलने नहीं पायेंगे।

मास्टर जी इन चारों बच्चों की भोली बातों को सुनकर बड़ी परेशानी में पड़ गये। वह इन बच्चों के माता पिता की आज्ञा से ही इन्हें कैम्प में रख सकते थे। बहुत सोचने के बाद उन्होंने कहा कि देखो बच्चो ! बिना माता पिता की आज्ञा के कोई भी काम नहीं करना चाहिए। तुम चारों पहले घर जाकर अपने माता पिता की आज्ञा ले आओ।

मास्टर जी की बातों को सुनकर इन चारों बच्चों की आंखों में पानी भर आया। कैम्प का जीवन इन बच्चों को थोड़े ही समय में इतना पसन्द आया था कि वह यहां से घर लौट जाना चाहते ही न थे। विजय तो सिसकते हुए मास्टर जी के पैरों को पकड़ कर बोला—अब हम लोग घर नहीं जा सकते। आप जैसे भी हो हमें यहां दाखिल करलें।

मास्टर जी इन बच्चों की जिद से काफी परेशानी में पड़ गए। वह कुछ देर सोचते रहे और फिर बोले—अच्छा एक काम करो। मै तुम लोगों के घर संदेशा भिजवा देता हूँ। तुम्हारे माता-पिता की आज्ञा लेने कल मै खुद तुम्हारे गांव जाऊँगा। तुम लोग आज खाना खाकर तम्बू में आराम करो। अगर तुम चारों यहाँ रहना ही चाहते हो तो यहाँ के नियम तुम्हें भली-भांति समझने होंगे। यह नियम की पुस्तक लो, इसे तुम चारों पढ़ डालो।

विजय और उसके साथी बैठकर ध्यान से नियमावली पढ़ने लगे। मास्टर जी ने दो लड़कों को इन चारों के घर इनकी खबर देने के लिए भेज दिया।

खाने के समय इन चारों का परिचय अन्य दूसरे बच्चों से हुआ। सभी बच्चे इन चारों से मिलकर बड़े खुश हुए। विजय ने अपने आने की कहानी को सभी बच्चों को सुनाया। आम खाने और नाव चलाने की बात में सभी बच्चों को बड़ा आनन्द मिला। कुछ बच्चों ने तो नाव में सैर करने की इच्छा भी प्रकट की और गोपाल से नाव में सैर कराने के लिए जिद करने लगे परन्तु गोपाल ने यह कह कर कि रात में नाव मुझे चलानी नहीं आती,

उन लोगों को टाल दिया । इस समय गोपाल काफी थक गया था । उसकी आंखें मुंदी जा रही थीं ।

दस बज रहे थे । सभी बच्चे थक कर चूर हो गए थे । इतने में सोने का घंटा बज गया और सभी बच्चे अपनी-अपनी जगहों पर जाकर सो गए ।

दिन भर की थकावट से विजय और उनके साथियों का सारा शरीर चूर-चूर हो गया था । बिस्तर पर लेटते ही उन लोगों को गहरी नींद आ गई । उन लोगों के ऊपर नीले आकाश में चांद चमक रहा था और उसकी शीतल चांदनी धरती पर चारों ओर बिखरी पड़ी थी । चारों ओर शान्ति थी । कैम्प के सभी बच्चे गहरी नींद में सो गए थे । इस समय केवल मास्टर जी और उनके दो साथी ही जाग रहे थे । सभी बच्चों के सो जाने के बाद मास्टर जी ने एक-एक कर सभी बच्चों की गिनती की । गिनती कर लेने के बाद दरवाजे पर कांटेदार तार का बेड़ा खड़ा कर वह भी सो गए ।

सवेरे पांच बजे बड़ी जोर से घंटा टनटना उठा । सभी बच्चे घंटे की आवाज पर जाग गए । विजय और उसके साथी भी उठ बैठे । कैम्प के नियम पढ़

लेने के कारण वह जानते थे कि सवेरे ही सबसे पहला काम उन्हें नदी किनारे जा कर स्नान करना है। इसलिए अन्य लड़कों के झुंड के साथ-साथ वह भी नदी किनारे चल पड़े। नदी किनारे गोपाल की नाव खड़ी थी। गोपाल नदी किनारे पहुँचते ही अपनी नाव पर चढ़ गया और छलांग मार कर स्नान करने के लिए नदी में कूद पड़ा। फिर क्या था, एक-एक कर सभी बच्चे इसी प्रकार नदी में कूदने लगे। परन्तु विमल किनारे पर बैठकर चुल्लू मे पानी भर-भर कर ही नहाने लगा। उसे पानी से डर लगता था। विजय को विमल के इस प्रकार नहाने से बड़ी शर्म मालूम पड़ी। वह विमल का हाथ पकड़ कर नदी की ओर खींचने लगा। पर विमल डर से चिल्लाने लगा। विजय ने भी विमल का डर छुड़ाने का फैसला कर लिया था। वह जबरदस्ती विमल को पकड़ कर नदी में खींच ले गया। विमल हाथ पांव पटकने लगा। पर, सारे बच्चों ने मिलकर विमल को जबरदस्ती डुबकी लगवादी। एक डुबकी लगाते ही विमल का सारा डर रफूचक्कर हो गया। उसने विजय से कहा—अब मेरा डर जाता रहा। तुम मेरा हाथ छोड़ दो। मैं खुद ही दूसरी डुबकी

लगाता हूँ। विजय ने हाथ छोड़ दिया। विमल अब बार-बार पानी में डुबकी लगाता। उसे भी दूसरे बच्चों की तरह बड़ा आनन्द आने लगा। उसका सारा डर समाप्त हो गया था। अब वह नाव में चढ़कर नदी में कूदने के लिए आगे बढ़ा। पर, इतने में ही दूसरा घंटा बज गया। सभी बच्चे नदी से जल्दी-जल्दी निकल कर बाहर आकर अपने-अपने कपड़े पहनने लगे। कपड़े पहन कर सभी कैम्प की ओर दौड़ पड़े। वहां सवेरे का जलपान तैयार था। गरम-गरम दूध और जलेबी। गोपाल जलपान को देखकर उछल पड़ा। उसने धीरे से विजय के कान में कहा—भैया, ऐसा मालूम पडता है जैसे स्वर्ग में आ गए हों। मैने ऐसा जलपान आज तक नहीं किया था।

परन्तु विजय ने गोपाल को डांट दिया। उसे चुप रहने का इशारा करता हुआ वह बोला—चुप रहो ! यह सब बात अकेले में करना। मुझे तो इस समय यह चिंता सता रही है कि कहीं पिता जी न आते हों। कही कल दिनभर और रातभर गायब रहने के कारण चपत न पड़े।

विजय की बात सुनकर सभी को फिर घर की याद आगई। विमल जो उंगली पर लगे जलेबी का

रस चाट रहा था रूंआसा हो गया। गोपाल और मोहन की भी हालत विमल से कुछ कम नहीं थी। इसी सोच में यह चारों बैठे थे कि फिर घण्टा टनटना उठा। सभी बच्चे हाथ में कुदाली लेकर चलने लगे।

मास्टर जी ने विजय और उसके साथियों से कहा—देखो बच्चो ! तुम्हारे पिताजी आते ही होंगे। मैंने उनके पास सूचना भिजवा दी है। उनकी आज्ञा मिलने पर तुम चारों भी काम पर चले आना।

विजय को मास्टर जी की बात सुनकर बड़ी घबडाहट हुई। वह बोला-क्या आप भी जा रहे हैं ? तब तो पिता जी हमें जरूर लिवा ले जायेंगे।

मास्टर जी उसकी बात पर हँस पड़े। बोले—अच्छा, अच्छा। मैं तुम लोगों के साथ ही उनका इंतजार करता हूं। उनके आ जाने पर ही तुम लोगों को साथ लेकर मैं भी काम पर चलूंगा।

अभी मास्टर जी ने अपनी बात पूरी भी न की थी कि गोपाल के पिताजी की आवाज आई-कहां है गोपाल ! जरा सामने तो आ। कल से घर से गायब है। काम का न काज का, ढाई सेर अनाज का। रोज़ एक न एक झमेला खड़ा किये रहता है।

मास्टर जी बाहर आए। उन्होंने देखा कि इन चारों बच्चों के पिताजी काफी नाराज हैं। उन्होंने सभी को कुर्सी पर बैठने के लिए निवेदन किया। सभी कुर्सी पर बैठ गए पर गोपाल का पिता कुछ झिझका। मास्टर जी ने जबरदस्ती उसे कुर्सी पर बैठा दिया।

इसके बाद मास्टर जी ने कहा-अच्छा हुआ आप लोग आगए। आप लोग अगर न आते तो मैं आज आप लोगों की सेवा में आता। आपके बच्चे हमारे कैम्प में आये हैं। मैं आप लोगों के सामने अपने इस ग्रीष्म कैम्प के बारे में कुछ कहना चाहूंगा। आप लोग जानते ही हैं कि गर्मी की छुट्टियों में बच्चे गली में बुरी बातों को सीखने मे अपना समय नष्ट करते हैं। बच्चों के शरीर, मन और बुद्धि तीनों का विकास कराने के लिए ही यह कैम्प लगाया गया है। अगर आप लोग चाहते है कि आपके बच्चे घर में रहकर शरारत एवं बुरी बात सीखने से बचें तो आप उन्हें हमारे कैम्प में भर्ती करदें। इस समय हमारे इस कैम्प में करीब दो सौ बच्चे हैं और सभी बच्चे अच्छे अच्छे घरों से सम्बन्ध रखते हैं।

इतना कहकर मास्टर जी थोड़ी देर के लिए

चुप हो गये। उनकी बात गोपाल के पिता को कुछ समझ में न आई। वह मोहन के पिता का मुंह ताकने लगा।

विजय के पिता बड़े समझदार थे। उन्हें मास्टर जी की बात बहुत पसन्द आयी। वह पहिले ही विजय की शरारतों से तंग आकर उसे गुरुकुल भेजने को सोच रहे थे परन्तु विजय की मां के कारण अभी तक ऐसा न कर सके थे। उन्होंने कहा—ठीक है। आप विजय को कैम्प में भर्ती करलें। मै आज ही उसका जरूरी सामान भिजवाये देता हूँ। दूसरे चौथे मै आकर उसकी खबर ले जाया करूँगा।

विजय के पिता की देखा देखी विमल और मोहन के पिता ने भी अपने बच्चों को कैम्प में भर्ती करवाने के लिए अपनी अपनी राय दे दी। गोपाल के पिता ने देखा कि जब इतने पढ़े लिखे और पैसे वाले आदमी अपने बच्चों को कैम्प में रख रहे हैं, तो फिर ठीक ही होगा। उसने भी अपनी सहमति दे दी।

मास्टर जी ने इन मेहमानों के लिए एक-एक गिलास दूध मंगाया। दूध पीने के बाद मोहन के पिता ने चारों बच्चों से कहा—अरे बदमाशो ! तुम

लोगों ने जो किया सो ठीक ही किया, पर अब मास्टर जी का कहना मानना और कोई नया बखेड़ा मत करना।

विजय ने कहा—चाचा जी आप कोई चिंता न करें। हम सब मास्टर जी की आज्ञा मानकर ही चलेंगे।

मोहन के पिता ने विजय का कान पकड़ कर उसके गाल पर एक हल्की सी चपत लगाते हुए कहा—अच्छा-अच्छा। हम लोग अब चलते हैं। दो चार दिन बाद तुम लोगों की खोज खबर लेने फिर आयेंगे।

मास्टर जी ने सभी मेहमानों को विदा किया। इसके बाद इन चारों को लेकर वह चल पड़े। चलते वक्त इन चारों के हाथों में भी कुदाली थी।

खेल खेल में

कैम्प से करीब आधे मील की दूरी पर ही गांव की बस्ती थी। खपरैल के कच्चे घर और उसके सामने फैले हुए छोटे-छोटे खेत ही यहां के रहने वालों की जमा पूंजी थी। रेलगाड़ी और मोटर-गाड़ी के ज़माने में यहाँ के लोग अब भी बैलगाड़ी में बैठकर अपना आनाज बेचने शहर जाते थे। यहां के रहने वाले गरीब किसान हजारों साल से चले आ रहे उसी पुराने तरीके से अब भी खेती करते थे और साल में दस महीने आधा पेट खाकर रहते थे। बीमार पड़ जाने पर अब भी ओझा जी मंत्र फूंकते थे। छोटे छोटे बच्चे लंगोटी लगाए नाली और मिट्टी में खेलते और उनके चेहरे मैले, कुचैले और मुरझाये हुये थे।

मास्टर जी इस पिछड़े गाँव में अपने इन छोटे छोटे बच्चों की मदद से दो महीने की गर्मी की छुट्टी में एक स्कूल और एक खेल का मैदान बनाना चाहते थे। सवेरे ही जलपान करने के बाद सभी बच्चे काम पर जुट जाते थे। कोई मिट्टी खोदता, कोई

सड़क पर बाल्टी से पानी डालता, कोई ज़मीन बराबर करता और कोई लकड़ी काटकर स्कूल की खिड़की बनाने में मदद करता। दोपहर को खाना खाकर एक घण्टे आराम करने के बाद फिर बच्चे अपने अपने काम पर जुट जाते थे। बच्चों को काम में खेल जैसा आनन्द आता था और काम बड़ी जल्दी से हो जाता था।

विजय और उसके साथियों को मास्टर जी ने खेल के मैदान की जमीन को बराबर करने में लगा दिया। विमल को कुदाली चलाने का बड़ा शौक था। वह बड़े चाव से कुदाली चलाने लगा। दो चार बार ही कुदाली चलाने के बाद उसके हाथों में दर्द होने लगा। वह करता भी तो क्या! अगर वह काम करना छोड़कर बैठ जाता तो दूसरे बच्चे उसका मज़ाक उड़ाते। वह धीरे-धीरे कुदाली उठाता और फिर जमीन में बिना धसाए ही उसे धीरे-धीरे फिर ऊपर उठाता।

इस प्रकार उसे मेहनत कम करनी पड़ती। इसी समय मास्टर जी वहां आ पहुंचे। उन्होंने विमल की कमजोरी भांप ली। वह उसकी पीठ थपथपाकर बोले—शाबास! तुमने बड़ा काम किया है अब थक

गए हो। जाओ आराम करो।

विमल बड़ी शान से बोला—नहीं, मास्टर जी। हम सेवा करने आए है। आप मुझे मत रोकिए। मुझे आज इस जमीन के टुकड़े को बराबर करना है।

मास्टर जी हंसकर विमल की पीठ पर हाथ फेरते हुए आगे बढ गए।

गोपाल, विजय और मोहन ने काफी जी लगाकर मेहनत की और शाम तक का काम दोपहर तक ही खत्म कर डाला। मास्टर जी को भी उनके उत्साह और काम पर अचम्भा हुआ।

इस गाव के रहने वालों के लिये यह एक नई चीज थी। पैन्ट कमीज पहने, स्वस्थ्य बच्चों को मिट्टी खोदते हुए देखकर वह उन्हें सिर फिरा समझते थे। एक बूढे ने तो यह कहा कि यह लोग हमारे गांव को बरबाद करने आये है। स्कूल बनेगा और हमारे बच्चे भी काम धन्धा छोड़कर इन लड़कों जैसे कोट पैन्ट पहन कर सब बेकार के काम में लग जायेंगे।

मास्टर जी को गांव वालों की यह बात अखरती थी। वह गांव वालों का सहयोग लेना चाहते थे।

एक दिन मास्टर जी ने सारे बच्चों को लेकर गांव वालों की सभा बुलाई। पहिले तो गांव वाले आने में हिचकते थे पर धारे-धीरे एक-एक कर सभी इकट्ठा होने लगे। मास्टर जी ने सभी लोगों के सामने स्कूल तथा खेल के मैदान बनाने व इससे लाभ की बात कही। पर लोगों ने बीच में हल्ला करके मास्टर जी को बोलने नहीं दिया और यह कहते हुए कि सारा गांव चौपट करके छोड़ेंगे, अपने अपने घरों को चले गये।

मास्टर जी बड़ी चिंता में पड़ गये। जिन लोगों के लिए काम किया जाए, अगर उन्हीं लोगों का भी साथ न मिले तो ऐसे काम से फायदा ही क्या ? विजय ने मास्टर जी से कहा—आप इन बूढ़ों की बात से क्यों उदास होते हैं। हम लोग यहां के बच्चों को अपना साथी बनायेंगे। उन्हें खेल के मैदान में खेलने के लिये बुलायेंगे। बच्चों को अपना साथी बना लेने से हमारा काम बन जायेगा।

विजय की बात मास्टर जी को जंच गई। उन्होंने कहा—ठीक है। तुम लोग आज से यहां फुटबाल खेला करो। तुम्हें खेलते देखकर बच्चे जरूर यहां आयेंगे और उनका खेलने को जी ललचायेगा।

मास्टर जी की बात का फल सही निकला। गांव के बच्चे खेल के मैदान के पास आने लगे और उनका भी जी खेलने को ललचाने लगा। उनकी भी इच्छा अपने पैर से फुटबाल को मारने की होती। कभी-कभी विजय आदि जानकर फुटबाल उनकी ओर फेंक देते थे और गांव के बच्चे डरते डरते उसे वापस पैर से मारकर फेंक देते थे। धीरे-धीरे विजय इन बच्चों को भी अपने साथ खिलाने लगे। अब गांव के काफी बच्चे विजय आदि की टोली मे आकर फुटबाल खेलने लगे।

खेल का मैदान तैयार हो गया था। इसी मैदान में सवेरे और शाम को फुटबाल का मैच खेला जाता था। मास्टर जी ने दिन की कड़ी धूप में इसी मैदान में एक छोटा सा मिट्टी का कमरा बना दिया। गांव के बच्चे दिन में विजय और अन्य साथियों के साथ यहां आकर कैरम खेलते। कभी कभी मास्टर जी इन बच्चों को कहानी भी सुनाते थे।

बच्चे बड़े चाव से मास्टर जी के द्वारा सुनाई गयी कहानी को सुनते थे। कभी कभी मास्टर जी आधी कहानी सुनाने के बाद बच्चों से कहते कि आगे का हाल इस किताब में पढ़ डालो। बच्चों को पढ़ना तो

आता नहीं था। वह विजय और उसके साथियों को कहानी पढ़कर सुना देने की खुशामद करते रहते थे। विजय और उसके साथी उन्हें कहते थे कि पढ़ना सीखकर खुद क्यों नहीं पढ़ लेते। धीरे-धीरे गांव के बच्चो में पढ़ने का शौक होने लगा और वह इन बच्चों से पढ़ना लिखना सीखने लगे।

एक दिन मास्टर जी ने सभी बच्चों को रामायण की कहानी सुनाई। कहानी सुनाने के बाद उन्होंने रामायण की दो चौपाई बच्चों को रटा दीं। बच्चे उस चौपाई को रटते हुये अपने घर पहुंचे। घर वाले अपने बच्चों के मुंह से रामायण की चौपाई सुनकर कुछ कुछ पिघलने लगे। उन्होंने मास्टर जी से रामायण की कथा सुनने की इच्छा प्रकट की। एक बूढ़ा तो एक दिन अपने लड़के के साथ मास्टर जी के मुंह से रामायण सुनके खेल के मैदान में आ पहुँचा। मास्टर जी ने उसे बड़े आदर और प्रेम के साथ बिठाया।

मास्टर जी ने कहा—कहिए दादा, आपकी मैं क्या सेवा करूँ ?

बूढ़े ने कहा—आज अपना बच्चू रामायण की चौपाई पढ़ रहा था। मैंने सोचा कि रामायण की

कथा इस बुढ़ापे में आपसे सुनकर तर जाऊँ। आप पंडित है। हमें यह मालूम न था। उस दिन मुझसे बड़ी चूक हो गई। आज शाम को शिवालय पर आप कथा कहें तो बड़ी कृपा होगी।

मास्टर जी ने शायद ही जीवन में कभी कथा कही हो। वह एक बार तो परेशानी में पड़ गए पर गांव वालों को समझाने के लिए यह एक अच्छा मौका था। उन्होंने कहा—ठीक है दादा। मै आप की आज्ञा मानता हूँ। आज शाम को मै जरूर कथा कहूँगा।

शाम को गांव का गाँव शिवालय पर इकट्ठा हो गया। औरतें एक ओर टाट का पर्दा लगा कर बैठी थीं। सामने गांव का सारा जन बैठा था। मास्टर जी बड़े सरल ढंग से रामायण की चौपाई कहकर उसे गांव वालों को समझाते थे। बात-बात में वह यह भी कहते थे कि आप लोग अपने बच्चों को पढ़ा लिखा कर ऐसा बनायें कि वह लोग रोज आपको रामायण की कथा सुना सकें।

मास्टर जी के इस कथा कहने के बीच-बीच में गांव वाले बड़े जोर-जोर से नारा लगाते थे, कि

बोल सियावर रामचन्द्र की जय। विमल को भी कथा के बीच-बीच में यह नारा लगवाने में बड़ा मज़ा आता था। सभी गांव वाले बड़े जोर शोर से उसके साथ नारा लगाते थे।

दो घंटे तक कथा होती रही। इसके बाद सभी अपने घर लौटे। लौटते वक्त सभी मास्टर जी की बड़ाई कर रहे थे। चौधरी जी तो फूले न समा रहे थे। उन्होंने तो रास्ते में ही यह फैसला कर डाला कि वह अपने बच्चे को जरूर पढ़ायेंगे।

धीरे-धीरे लोग मास्टर जी के पास आने लगे और उनके काम में हाथ बटाने लगे। गांव वालों की मदद से दो महीने का काम एक महीने में ही पूरा हो गया।

चिड़ियाघर

केम्प के बच्चों को अब काम समाप्त हो जाने के कारण पूरे दिन की छुट्टी मिल गई।

वह नदी किनारे जाकर आम खाते थे और तैरते थे। गोपाल दो-दो बच्चों को बारी बारी नाव में बैठाकर नदी की सैर कराता था। नदी गर्मी में

ज़्यादा गहरी न थी इसलिए बच्चों के डूबने का भी डर नही था। मास्टर जी ने इसीलिए नाव की सैर करने की छूट दे दी थी।

परन्तु अब इन बच्चों को कोई नया काम चाहिये था। घूमने आदि से दो चार दिन मे ही इनका मन भर गया था। वह सब मास्टर जी से काम मागने लगे। मास्टर जी दो तीन दिन तो इन्हे टालते रहे। उनके पास अब सरकार से मिला हुआ धन समाप्त हो गया था। नए काम के लिए वह धन कहा से लाते।

एक दिन प्रात.काल विजय, मोहन, विमल और गोपाल नाव पर सैर कर रहे थे। गांव से वह थोड़ी दूर पर निकल आये थे। एकाएक किनारे पर पानी पीते हुए, विजय ने एक हिरण के बच्चे को देखा। विजय ने कहा—चलो दोस्तो किनारे चलकर इस हिरण के बच्चे को पकड़ कर कैम्प में ले चलें। बड़ा मज़ा रहेगा।

गोपाल जल्दी—जल्दी पतवार चलाने लगा। पर विजय तो आधे रास्ते में ही नाव पर से कूद कर किनारे की ओर भागने लगा। धीरे धीरे चारों साथी हिरण के करीब पहुंच कर उसे चारों ओर से घेर कर

खड़े हो गये। हिरण का बच्चा अपने को घिरा देख कर खूब जोर से उछला पर इन चारों के आगे उस बेचारे की एक न चली। गोपाल ने उसे पकड़ कर नाव पर रखकर रस्सी से बांध दिया। बेचारा हिरण का बच्चा बड़ी मुसीबत में फंस गया। वह बार बार नाव से कूदने के लिए उछलता। विमल और मोहन उसके मुंह को चूमते थे। उन्हें यह हिरण का बच्चा बड़ा भला लग रहा था।

यह चारों साथी शोर मचाते हुए हिरण के बच्चे को लेकर कैम्प में पहुँचे। सभी बच्चे इस हिरण को देखकर बड़े खुश हुए। एक एक कर वह इसे गोद मे लेकर खेलने लगे। गांव के अन्य सभी बच्चे भी हिरण के बच्चे को देखने के लिए कैम्प मे आने लगे।

मास्टर जी हिरण के बच्चे को देखकर बड़े खुश हुए। वह खुशी से उछल पड़े और जोर-जोर कहने लगे- मिल गया ! मिल गया, बच्चो तुम्हारे लिए काम मिल गया।

बच्चे मास्टर जी की बात समझ न पाये। कुछ देर बाद उन्होंने कहा–मेरे नन्हे दोस्तो ! चलो हम लोग आज से खेल के मैदान में एक छोटा सा चिड़िया घर बनायें। यह हिरण का बच्चा वहीं रहेगा। हमारे चिड़ियाघर का यह पहला मेहमान है। विजय, तुमने हिरण लाकर मुझे एक नया विचार दिया है।

मास्टर जी की बात से सभी बच्चे खुशी से नाच उठे। हिरण के गले मे पड़ी हुई रस्सी को विजय के हाथ में देखकर सभी बच्चे यह सोच रहे थे कि काश यह हिरण उन्होंने पकड़ा होता।

वापस घर को

सवेरे सूर्य उगते ही गांव के बच्चे हाथ में रोटी और दाने लेकर इस छोटे से चिड़िया-घर में पहुंच जाते थे। इन बच्चों को हिरण के छोटे बच्चे को अपने हाथ से खिलाने में बड़ा मज़ा आता था। नन्हा हिरण भी इन बच्चों से हिल मिल गया था। वह बच्चों को प्यार करने लगा था और बच्चे इस नन्हे हिरण को।

खेल के मैदान के एक ओर खपरैल बिछाकर चार पांच कोठरी बना दी गईं थीं। कोठरी का फर्श कच्चा था। चारों ओर जालीदार तार लगा कर बीच में एक लकड़ी का दरवाजा लगा दिया गया था। इस छोटे से घर में धीरे धीरे नन्हे हिरण के और भी साथी आने लगे थे। सभी बच्चे जी जान से इस चिड़िया-घर को बसाने में मदद करने लगे।

विमल को बन्दर को चिड़ाने में बड़ा मजा आता था। वह किसी न किसी प्रकार दो चार बन्दरों को पकड़ कर इस चिड़िया घर में रखना चाहता था, पर बन्दर विमल से ज्यादा चालाक थे। कोई भी

उसकी पकड़ में नहीं आता था। बन्दरों को पकड़ने में विमल ने दर्जनों केले उन्हें खिला डाले पर कोई भी पकड़ में आता ही न था। पर एक दिन किस्मत का मारा एक बन्दर विमल की पकड़ में आ ही गया। बात यों हुई कि कैम्प का दरवाजा खुला था। अन्दर कुछ फल और खाना देखकर एक बन्दर दबे पांव वहां आकर फल खाने लगा। बाहर विमल कपड़े सुखा रहा था। उसकी नजर बन्दर राम पर पड़ गई। बस दबे पांव आकर उसने बाहर से दरवाजा बन्द कर दिया।

बन्दर राम पकड़ लिए गए। उसके गले में एक जंजीर पहना दी गई। चीं चीं कर बन्दर ने अपने छुटकारे के लिए कई बार बिनती की पर विमल ने कहा—बच्चू, चोरी और सीना जोरी। अब उम्र भर की कैद, बैठकर आराम से इस चिड़िया घर में काटो। पर घबराओ नहीं। तुम्हें अधिक तकलीफ नहीं दी जायेगी। केवल तुम्हें हम लोगों का थोड़ा मन बहलाव करना पड़ेगा।

गोपाल और विजय नाव में बैठकर रोज हिरण की तलाश में दूर-दूर तक नदी के किनारे जाते थे।

जिस जगह उन्होंने हिरण पकड़ा था वहां घंटों बैठकर उन लोगों ने हिरण के आने की राह देखी, पर शायद हिरण चौकन्ने हो गए थे। उन्हे निराश ही लौटना पड़ा।

चिड़िया-घर तो अब गांव वालों की ही चोज थी। इन बच्चों को तो अब अपने-अपने घर लौट जाना था। गांव वाले जी जान से जानवर पकडने मे मदद करने लगे। ओझा जी जानवर पकडने में उस्ताद थे। तोता,मैना और कई तरह की चिड़ियां उन्होंने एक दर्जन से अधिक पकड़ कर दे दी थीं। परन्तु बच्चों को हिरण के बच्चे ही ज्यादा प्यारे थे। ओझा जी ने एक दिन आधे दर्जन से अधिक हिरण के बच्चे लाकर दिए। उन्होंने इन बच्चों को कैसे पकड़ा, इसका उत्तर आज तक उन्होंने नहीं दिया। पूछने पर केवल हंस भर देते थे।

चिड़िया-घर, खेल का मैदान और स्कूल बन जाने से गांव में एक नया ही जोवन शुरू हो गया। गांव के बच्चे फटे, पुराने कपड़े पहन कर भी अब अच्छे और भले दिखलाई देते थे। वह रोज स्कूल आते थे। गांव वाले जो पढ़ाई का पहले विरोध करते थे अब

के बाद उनके बच्चों को कौन पढ़ायेगा। कहीं यह बच्चे पहले जैसे ही न हो जाएँ। गांव वालो से अधिक चिन्ता मास्टर जी को खुद थी। वह अपने किसी भी काम को नष्ट होते नही देख सकते थे। उन्होंने पहले से ही शहर के एक अध्यापक को यहा आने के लिए लिख दिया था। जिस दिन यह अध्यापक आए उसी दिन मास्टर जी ने उन्हे सब कुछ समझाया और फिर स्कूल उनके जिम्मे कर दिया। गांव वालों ने चन्दा करके मास्टर जी की तनख्वाह देने का वचन दिया। वैसे मास्टर जी ने सरकार को भी पत्र लिखकर सहायता की कोशिश की थी।

× × ×

स्कूल की छुट्टी अब समाप्त हो रही थी। सभी बच्चे घर जाने को उत्सुक थे। घर पर इन बच्चों के माता पिता भी अब अपने बच्चों को अपने पास देखना चाहते थे। विजय और उसके साथियों के माता पिता कई बार आकर अपने बच्चों को कैम्प में देख गए थे। अब वह भी अपने बच्चों को घर ले जाना चाहते थे।

एक दिन मास्टर जी ने सभी गांव वालों को

बुलाया और उन्हे दो दिन बाद अपना खेमा उखाड़े जाने की सूचना दे दी। उन्होंने इसके बाद चौधरी जी, पुजारी जी आदि पांच आदमियों की एक कमेटी बनाकर सारा काम उन्हें सौंप दिया।

आज के दिन सभी गांव वालों की आंखों में आँसू बह रहे थे क्योंकि आज तम्बू उखाड़े जा रहे थे। बच्चे अपने सामान को बांध रहे थे। शहर से आई एक बस उन्हे अपने अपने घरों को ले जाने के लिए तैयार खड़ी थी। विजय, मोहन, विमल और गोपाल सभी साथियों से विदा ले रहे थे। अंत में इन लोगों ने मास्टर जी के चरण छूकर उनसे भी विदा ली। मास्टर जी रो पड़े। उनके मुंह से शब्द न निकला। विजय और उनके साथियों ने दो महीने में ही उनके दिल में घर बना लिया था। खैर, बस में सब बैठ गये और धीरे-धीरे बस चल पड़ी। मास्टर जी ने बस के दरवाजे पर खड़े होकर सभी गांव वालों को हाथ जोड़ कर नमस्कार किया और जब बस काफी आगे बढ़ गई तब भी वह हाथ से रूमाल हिलाते रहे।

विजय और उसके साथी नदी किनारे अपनी नाव में बैठकर अपने घर लौट पड़े। आज इन चारों

साथियों के मन उदास थे। उन्हें अपने नए दोस्तों से बिछुड़ने का बड़ा दुःख था।

नाव धीरे धीरे इनके गांव के किनारे पहुंची। किनारे पर इन बच्चों के माता पिता तो खड़े ही थे और भी सैकड़ों बच्चे उन्हें लेने के लिए आए थे।

आज विजय और उसके साथियों को देखने के लिये सारा गांव उमड़ आया था। सभी इन चारों बच्चो की प्रशंसा कर रहे थे।

यह चारों बच्चे नाव से कूदकर अपने मां बाप के गले से चिपट गये। फिर वह अपने पुराने साथियों से मिले। उनके पूराने साथी आज विजय को नटखट न कहकर विजयकुमार कह रहे थे। वह बड़े प्यार से कहते—भैया विजयकुमार अब की बार गर्मी की छुट्टियों में हम भी तुम्हारे साथ कैम्प में चलेंगे।

विजय हंस देता था। कई दिनों तक उसने कैम्प की कहानी लोगों को सुनाई। हिरण और चिड़िया घर की बात से सभी बच्चे खुश हुए। उन लोगों ने भी अपने गाँव में एक चिड़िया-घर बनाने के बारे में फैसला कर लिया।

विजय अब सारे गाँव के बच्चों का नेता है गांव के सभी बूढ़े—जवान अब उसे विजयकुमार कह कर पुकारते हैं पर पुजारी जी अब भी उसे नटख ही कहते है। कभी कभी विमल मोहन और गोप भी प्यार से उसे नटखट सरदार के नाम से बु लेते हैं। विजय इसका बुरा नहीं मानता है।